गुण केते कहूं

गुण केते कहूं मेरे पिऊ जी, जो हमसों किए अनेक जी।
ऐ बुध इन आकार की, क्यूं कहे जुबां विवेक जी ।।

कई विध विध के सुख धाम के, जो हमको दिए इत जी।
तारतम करके रोसनी, कई बिध करी प्राप्त जी ।।

सेहेजल सुखमें झीलते, काहूं दुख न सुनिया नाम जी।
सो मायामें इत आए के, सुख अखंड देखाया धाम जी ।।

कहे इंद्रावती अति उछरंगे, हमको लाड़ लड़ाए जी।
निरमल नेत्र किए जो आतम के, परदे दिए उड़ाए जी।।

आप पेहचान कराई अपनी ,लई अपने पास जगाऐ जी।
बड़ी बड़ाई दई आपथें, लई इंद्रावती कंठ लगाए जी ।।